विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ　　　　　　　　　　दिनांक -25-05-2020

विषय -हिन्दी　　　　　　　　　　शिक्षक -पंकज सर

सुप्रभात बच्चों कल हम आपलोगो के बीच धातु से बने क्रिया को समझाए थे आज क्रिया के दो भेद सकर्मक और अकर्मक के बारे में अध्ययन कराएगे ।

क्रिया के भेद :-

1. अकर्मक क्रिया
2. सकर्मक क्रिया

1. अकर्मक क्रिया :-

अकर्मक क्रिया का अर्थ होता है कर्म के बिना या कर्म रहित। जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं पडती या जो क्रिया प्रश्न पूछने पर कोई उत्तर नहीं देती उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन क्रियाओं का फल और व्यापर कर्ता को मिलता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे :- तैरना , कूदना , सोना , ठहरना , उछलना , मरना , जीना , बरसना , रोना , चमकना , हँसता , चलता , दौड़ता , लजाना , होना , बढना , खेलना , अकड़ना , डरना , बैठना , उगना , जीना , चमकना , डोलना , मरना , घटना , फाँदना , जागना , बरसना , उछलना , कूदना आदि।

उदहारण :-

(i) वह चढ़ता है।
(ii) वे हंसते हैं।
(iii) नीता खा रही है।
(iv) पक्षी उड़ रहे हैं।
(v) बच्चा रो रहा है।

(vi) श्याम रोता है।
(vii) गौरव सोता है।
(viii) साँप रेंगता है।

. सकर्मक क्रिया :-

सकर्मक का अर्थ होता है कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे :-

(i) वह चढाई चढ़ता है।
(ii) मैं खुशी से हँसता हूँ।
(iii) नीता खाना खा रही है।
(iv) बच्चे जोरों से रो रहे हैं।
(v) श्याम चोट से रोता है।
(vi) श्याम फिल्म देख रहा है।

सकर्मक क्रिया के भेद :-

1. एककर्मक क्रिया
2. द्विकर्मक क्रिया
3. अपूर्ण क्रिया